REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 7 | APRIL - 2018

सुभद्रा कुमारी चौहान का काव्यः नारी की सामाजिक मनोभावना

डॉ. विदुषी आमेटा[1], अरविंद कुमार व्यास[2]
[1]सहायक आचार्य, हिन्दी–विभाग,
माधव विश्वविद्यालय, पिण्डवाड़ा (राजस्थान)
[2]शोधार्थी, हिन्दी–विभाग, माधव विश्वविद्यालय, पिण्डवाड़ा (राजस्थान)

सकल सृष्टि में प्रत्येक प्राणी का अपना समाज है, समाज की संरचना नर–नारी पर निर्भर होती है, दोनों ही उसकी केंद्रीय धूरी के रूप में होते हैं। इन दोनों में से एक का भी न होना समाज का न होना है। प्रलयोपरांत सृष्टि का नव निर्माण नर–नारी की संयुक्तता से ही हुआ है। समस्त संसार में जिसका भी निर्माण हुआ है, उसमें जो कोमलता और सरसता है, वह स्त्री स्वरूपा है और जो सहनशीलता और कठोरता है, वह पुरूष स्वरूपा है। छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद ने अपनी रचना 'कामायनी' में सृष्टि के आरंभ का जो चित्र प्रस्तुत किया है, उसमें स्त्री और पुरूष के साहचर्य को महत्वपूर्ण माना गया है। कामायनी में नारी का विभिन्न रूपों में वर्णन किया है, जैसे–

''नारी ! तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास रजत नग पगतल में।
पीयूष स्रोत सी बहा करो
जीवन के सुंदर समतल में।।''

वैदिक युग के पूर्व से वर्तमान समय तक भारतीय समाज में कई परिवर्तन हुए और उनका सीधा प्रभाव स्त्री पर ही पड़ा। आरम्भिक समय में नारी दैवीय पद पर अवस्थित थी परन्तु, समय के साथ–साथ उसकी सामाजिक स्थिति में आमूलचूल परिवर्तन आए। बीसवीं सदी के आरम्भिक वर्षों में भारत की राजनैतिक, सामाजिक तथा धार्मिक दशा में काफी उठापटक हुई। इस समय में नारी की स्थिति को कई साहित्यकारों ने अपने साहित्य में वर्णित किया है।

सुभद्रा कुमारी चौहान छायावाद की प्रमुख साहित्यकार है। स्वयं महिला होने के नाते अपने समय की महिलाओं के अन्तर्मन की भावनाओं को अपने साहित्य में प्रकट किया है। इस समय में नारी की सामाजिक स्तर पर दशा और दिशा अच्छी नहीं थी। उस पर कई तरह की पाबंदियां लगी हुई थी। मान–मर्यादा, लोक–लज्जा, पारिवारिक इज्जत आदि के पालन की जिम्मेदारी उसी पर निर्भर थी, पुरूष स्वयं को प्रधान घोषित कर स्त्री को उसकी दासी मान बैठा था। ऐसी कई संस्थाएं भी सामने आई जिन्होनें नारी सुधार को लेकर मुहिम चलाई। अतः लेखिका ने समाज में नारी के द्वंद्व को अपनी वाणी प्रदान की है।

भारतीय समाज में नारी सदा ही अपने पुरूष और परिवार के प्रति समर्पित रही है, देखा गया है कि वह अधिकाशंतः अपनी हँसी खुशी भी इनके लिए न्यौछावर कर देती है। पुरूष प्रधान समाज में नारी की स्थिति दयनीय रही है, और उस दशा को भोगते हुए भी स्वाभिमान बनाकर रखना उसकी अपनी विशेषता है। सुभद्रा जी ने अपनी कविताओं में नारी के इस रूप को प्रमुखता से प्रकट किया है। एक नारी अपनी गलती नहीं होते हुए भी परिवार के सम्मान को बचाने के लिए अपने पति से कहती है कि–

''बहुत दिनों तक हुई परीक्षा,
अब रूखा व्यवहार न हो।
अजी, बोल तो लिया करो तुम,
चाहे मुझपर प्यार न हो।।
जरा जरा सी बातों पर,
मत रूठो मेरे अभिमानी।
लो प्रसन्न हो जाओ,
गलती मैंने अपनी मानी।।''

अक्सर देखा गया है कि जहाँ रिश्तों को बचाने के लिए नारी अपनी हार मानती है, वहाँ उसकी लाचारी भी प्रकट हो जाती है। तत्कालीन परिस्थितियों में पुरूष के स्वार्थयुक्त दृष्टिकोण और अपने निस्वार्थ समर्पण के मध्य अथाह पीड़ा को सहन करते हुए भी नारी अपने स्वाभिमान को बचाए रखती है, और पुरूष से जो कुछ भी मिलता है उसे वह वरदान समझकर स्वीकार कर लेती है।

स्त्री अपने परिवार का और समाज का महत्वपूर्ण अंग है। रामायण युग से पहले के समय को छोड़कर देखा जाए तो भारतीय समाज में उसे उपेक्षित ही रखा गया है, उसे जो उचित सम्मान मिलना चाहिए था, वह उसे प्राप्त नहीं हो पाया है। सामाजिक स्तर पर मान–सम्मान, लाभ–लोभ आदि के जो भी महत्वपूर्ण पद थे, उन पर पुरूष वर्ग ने अपना एकाधिकार कर लिया था और नारी को शक्ति हीन बना दिया। सुभद्रा जी ने अपने काव्य में व्यक्तिगत स्तर पर पुरूष और समाज द्वारा मिलने वाली उपेक्षा का बखूब चित्रण किया है। सामंतवादी शासन व्यवस्था में नारी केवल भोग्या बनकर ही रह गई थी तथा लोग उसकी कमजोरी का फायदा उठा रहे थे। पारिवारिक स्तर पर भी नारी उपेक्षा की शिकार थी, उसे अपनों के मध्य ही पराये जैसा बनकर रहना पड़ता था, ऐसे में अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए वह संघर्षरत दिखाई देती है। इतना कुछ होते हुए भी वह अपने प्रति की गई उपेक्षा को चुपचाप सहन कर लेती है।

''स्वयं उपेक्षित पर गुरूजन का,
पथ भुला दुलार कैसा ?
तिरस्कार के योग्य बावली,
पर यह अतुल प्यार कैसा ?''

सुभद्रा जी ने अपनी कविताओं में जिस नारी का चित्रण किया है, वह स्वाभिमान से युक्त है। उसके लिए अपने सुख से बढ़कर अपनी इज्जत की रक्षा करना है। उसे कोई किसी कारणवश अपमानित करें, यह उसे असह्य है। वह अपने भाई और अपने पति को अपने कर्तव्य के प्रति सदैव सजग करती दिखाई देती है, जिसका प्रमुख कारण यह है कि उसे कोई अकारण अपमानित नहीं करें, और जहाँ बात आन–बान की आती है, वहाँ पर वह इतिहास समर्थित वीर नारियों से प्रेरणा लेकर स्वयं रण के लिए तैयार हो जाती है।

व्यक्ति जिस समाज में रहता है उसके अपने कुछ नियम होते हैं और प्रत्येक निवासी को उसे पालन करना ही पड़ता है, और देखा भी गया है कि भारतीय समाज में पुरूषों की तुलना में स्त्री इसके प्रति अधिक सजग है। सुभद्रा जी के काव्य की नायिका लोक मर्यादा के निर्वहन के लिए सदैव तत्पर दिखाई देती है, उसे इस बात का ध्यान है कि अपने सम्मान को बनाए रखने के लिए इसका निर्वाह करना आवश्यक है। इनके काव्य की नारी सबसे ज्यादा किसी बात से डरती है वह है– लांछना। और इसी डर के कारण वह सामाजिक रूढ़ियों, कुप्रथाओं, और पुरातन मान्यताओं को भी भोगती रहती है। अपनी कविताओं में एक जगह वह लोक मर्यादा के पालन करने के लिए कहती है कि–

''जहाँ पद–पद पर बाधा खडी, निराशा का पहिरे परिधान।
लांछना डरवाएगी वहाँ हाथ में लेकर कठिन कृपाण।।
चलेगी अपवादों की लूट, झुलस जावेगा कोमल गात।

विकलता के पलने में झूल, बिताओगे आँखों में रात।।''

जहाँ तक सुभद्रा जी के काव्य की नारी का प्रश्न है, वह पूर्ण रूप से भारतीय समाज के नियमों का पोषण करती है। उसके लिए उसका मान सम्मान ही सब कुछ है। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय में कुछ स्वयं सेवी संस्थाओं के द्वारा किए गए सुधारात्मक प्रयासों से नारी चेतना जाग्रत हुई। लेखिका ने अपने काव्य में नारी की इस जाग्रत मनोदशा का जीवंत चित्रण किया है।

संदर्भ सूचीः–

- सुभद्रा समग्रः सुभद्रा कुमारी चौहान, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद।
- जयशंकर प्रसाद, कामायनी।
- देवराज पथिक, हिन्दी कविता में राष्ट्रीय चेतना,कादम्बरी प्रकाशन नई दिल्ली, 1973।
- डॉ. राहुल, हिन्दी कविता के विविध संदर्भ, हिन्दुस्तान टाइम्स, नई दिल्ली।
- अनामिका, कहती औरतें, इतिहास बोध प्रकाशन, इलाहाबाद, 2003।
- अनामिका स्त्रीत्व का मानचित्र, सारांश प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000।
- सुशीला नेयर, कर्मठ महिलाएं, नेशनल बुक्स ट्रस्ट, नई दिल्ली, 2005।
- रीतु मेनन, भारतीय पुनर्जागरण में अग्रणी महिलाएं, नेशनल बुक्स ट्रस्ट, नई दिल्ली, 2005 ।